भारत कल और आज

एम. वी. बिजू, हिंदी अनुवादक,
मंडपम क्षेत्रीय केंद्र,

भारत वाल्मीकी और व्यास का देश है । विश्व-साहित्य में वाल्मीकी और व्यास ने जो योगदान दिया है, वह आज भी अनुपम है । वाल्मीकी ने रामायण और व्यास ने महाभारत भले ही हज़ारों साल पहले लिखा हो, लेकिन आज भी उसकी प्रासंगिकता कायम है । उनमें व्यक्त विचार आज भी उतना ही मूल्यवान है, जितना हज़ारों साल पहले । 'वसुधैव कुटुम्बकम' जैसा महान विचार संसार को प्रदान करनेवाले महापुरुष उस समय भारत में ही थे ।

साहित्य के क्षेत्र में नहीं विज्ञान, शिक्षा और व्यापार के क्षेत्र में भी भारत का अतीत उज्वल था । जहाँ आर्यभट जैसे महान वैज्ञानिक भारत में थे वहीं शुश्रुत जैसे चिकित्सा विद्वान भी यहाँ थे । जिस समय में संसार चीरफाड के विज्ञान के बारे में सुना ही नहीं होगा, उस समय भारत में ओपरेशन द्वारा अनेक रोगियों को जीवनदान दिया करते थे । अयुर्वेद का उद्भव भी भारत में ही था ।

शिक्षा के क्षेत्र में भी भारत का एक गौरवपूर्ण समय था । विश्वभारती, नलंदा, तक्षशिला आदि विश्वविद्यालय इसके उदाहरण हैं । विदेशों से भी छात्र यहाँ पढने आते थे और उन्हें निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी । गुरुकुल शिक्षा सम्प्रदाय भी भारत की ही विशेषता है ।

व्यापार के क्षेत्र में भी भारत का मुकाबला करनेवाला कोई नहीं था । अनेक विदेशी लोग भारत में व्यापार करने के लिए आते थे और अपने जेब भरकर हंसी खुशी वापस जाते थे । बम्बई, मद्रास, दिल्ली आदि उस समय के प्रमुख व्यापार केन्द्र थे । भारत के मेहमान नवाज़ी से खुश होकर वे बार-बार यहाँ व्यापार करने के लिए आते थे ।

छत्रपति शिवजी, राणी लक्ष्मीबाई और चन्द्रगुप्त जैसे महान शासकों के अधीन में रहने का सैभाग्य भारत देश को प्राप्त हुआ है । अपने जीवन रूपी कलम से वीरता और देश प्रेम की अमर कहानियाँ रचकर वे आज भी लोगों की प्रेरणा बनकर उनके मन में जीवित हैं । भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए इन लोगों ने अपना सर्वस्व त्याग दिया ।

कबीर, सूर, तुलसी और मीरा भी इसी देश में जन्मे हैं । उन लोगों की वाणी हीरों से भी अधिक मूल्यवान थी । कबीर कवि होने के साथ-साथ समाज सुधारक भी थे । शब्दों के द्वारा

एक कल्पना जगत बनाना वे नहीं चाहते थे । बल्कि उस समय समाज में प्रचलित अन्धविश्वासों और अत्याचारों के खिलाफ आवाज़ उठाने के लिए उन्होंने अपनी वाणी का इस्तेमाल किया ।

पुराने ज़माने में भारत में समाज सुधारकों की कमी नहीं थी । स्वामि विवेकानन्द, श्रीरामकृष्ण परमहंस, राजाराम मोहन रॉय आदि महान पुरुषों का नाम समाज में अमर रहेगा । भारत की ख्याति समुद्र के पार ले जाने में स्वामि विवेकानन्द का योगदान उल्लेखनीय है । स्वामि विवेकानन्द के मुँह से ही पहली बार संसार ने एक बड़ी सभा को "भाइयों और बहनों" सम्बोधित करते हुए सुना । उनका व्यक्तित्व और प्रभावशाली भाषा ने पूरे यूरोप को हिला दिया । सतिप्रथा और बालविवाह जैसी कुरीतियों को भारत से मिटाने में राजाराममोहन रॉय का योगदान भी अमर रहेगा ।

महात्मा गान्धी जैसे अहिंसावादी नेता को जन्म देने का सौभाग्य भी भारत को ही प्राप्त है । अपनी अहिंसावादी विचारधारा के बलबूते पर उन्होंने अंग्रेज़ी सरकार की जड़े हिला दी । तोपों और बम्बों के आगे न झुकनेवाली अंग्रेजी सरकार ने इस दुबले-पतले आदमी के सामने अपना सिर झुका दिया । तभी तो पाश्चात्य वैज्ञानिक ऐनस्टीन ने कहा-"आनेवाली पीढी बड़ी मुश्किल से यह विश्वास करेगा कि इस प्रकार का हाड़- माँसवाला व्यक्ति कभी इस संसार में जीवित थे" ।

इस प्रकार सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और नैतिक दृष्टि से भारत का अतीत अत्यन्त उज्वल था । इसलिए हुएनसाङ और फाहियान जैसे महान यात्री भारत आये थे । इस गौरवपूर्ण और श्रेष्ठ अतीत पर सभी भारतीय नाज़ कर सकते है ।

आज संसार का मुखौटा बिलकुल बदल गया है । विज्ञान की प्रगति ने सभी क्षेत्र में तेज़ी लायी है । आनेवाले सहस्राब्द की ओर जब हम देखते हैं, तो अनेक चुनौतियाँ उभरकर सामने आ रही है ।

वर्तमान युग में भारत की मुख्य समस्या है बेरोज़गारी । हम अपनी युवा शक्ति का सही उपयोग नहीं कर पा रहे है । शिक्षित लोगों की अधिकता और नौकरी की कमी ने पूरे देश में मायूसी का माहौल पैदा कर दी है । युवा लोग वर्तमान स्थिति से निराश हैं और उन्हें शासन वर्ग से विश्वास उठ गया है । इस निराशा से उठी विद्वेष के कारण उनके रास्ते भडक रहे हैं । पैसे के पीछे तेज़ी से भागनेवाले इस संसार में सही-गलत सोचने का समय किसी के पास नहीं है । युवा पीढी के इस प्रकार का शोषण भारत के भविष्य पर बुरा असर डाल रहा है ।

भारत 'अनेकता में एकता' का देश माना जाता है । यहाँ अनेक धर्म के लोग रहते हैं । इन धर्मों के बीच जो आपसी प्रेम है वही भारत की शक्ति है । लेकिन आज यह शक्ति शिथिल हो रही है । देश के विभिन्न राज्यों में साम्प्रदायिक दँगे आम बात बन गई है । लोगों के मन में

अलगाव और विद्वेष की भावना रोकना चाहिए । एकता ही हमारी शक्ति है । भारत जैसे विशाल देश में अगर एकता नहीं रहेगी तो देश का विनाश होते अधिक समय नहीं लगेगा ।

भ्रष्टाचार की समस्या आज हमारे देश की एक गम्भीर चुनौती बन गई है । भ्रष्टाचार एक ऐसा कीडा है जो हमारे देश को अन्दर ही अन्दर खाये जा रहे है । सरकारी दफ्तरों के चपरासी से लेकर देश वे प्रधानमन्त्री तक इस अनैतिक काम में जुड़े है । आज जिसके पास पैसा है वही ताकतवर माना जाता है । पैसा देकर कोई भी काम किसी भी तरीके से निकाला जा सकता है । आज हमारे नेता लोग अपने दफतरों में कम और अदालत के वरामतों में ज्यादा समय विता रहे है । नेताओं में मुजरिमों की बढती संख्या भी आशंकाजनक है । आज राजनीति पैसा कमाने का उद्योग बन गया है ।

आतंकवाद हमारे देश की बहुत वड़ी समस्या बन गई है । कश्मीर, असम, नागालाण्ड, आन्ध्रप्रदेश और तमिलनाडू जैसे अनेक राज्यों में आतंकवादी लोग साधारण नागरिकों को बेरहमी से मार डाल रहे है । सरकार इन उग्रवादियों को खत्म करने के लिए करोडों रुपये खर्च कर रही है । लेकिन अन्तिम परिणाम अभी तक नहीं निकाल पाया है । असल में हमें समस्या की जड़ तक जाना चाहिए तभी उसका समाधान निकाल पायेंगे । बीमारी आने पर जव हम दवाई लेते है तो उसका निवारण नही होता, वल्कि सिर्फ दमन मात्र होता है और समय आनेपर बीमारी फिर वापस आता है । इसलिए बीमारी के मूल कारण को समझकर उसका इलाज करना चाहिए । जब तक भारत के लोगों को निड़र होकर बसों और ट्रेइनों में सफर करने का वातावरण नहीं बन पाता, जव तक निश्चिन्त होकर सिनेमा देखने का माहौल नहीं बन पाता तव तक भारत का विकास सम्भव नहीं है ।

नारी शिक्षण के क्षेत्र में भी हम बहुत आगे नहीं निकल पाये है । लडकियों को स्कूल भेजने में माँ-बाप अधिक रुचि नहीं दिखाते । उन्हें माँ के गर्भ पर ही मार डाले जाते है । भारत में स्त्रियों के ऊपर हो रही अत्याचारों को देखकर ही समाज की सांस्कृतिक क्षति मालुम हो जायेगी । पुराने समय में भारतीय समाज में स्त्रियों को उच्च स्थान दिये जाते थे । उन्हें शक्ति का स्वरूप मानते थे । लेकिन आज स्त्रीयों की दश अत्यन्त शोचनीय है । भारत की आवादी में प्रमुख स्थान रखनेवाली स्त्री को केवल उपयोग की वस्तु मानी जाती है । उनकी शक्ति का सही उपभोग हम नहीं कर पा रहे हैं ।

हमारे आगे का रास्ता आसान नहीं है, लेकिन असंभव भी नहीं है । बाधाएँ तो हर क्षेत्र में होता है । उसे पार करने में ही सही शक्ति है । निश्चित लक्ष्य और बुलन्द हौसले के साथ अगर हम आगे बढे तो आनेवाली पीढी को एक गौरवपूर्ण अतीत हम दे सकते है जिससे प्रेरणा पाकर वे और उत्साह के साथ आगे बढ सकते हैं ।

❑